विचार बिन्दु

परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है और स्थिर होना मृत्यु। –जयशंकर प्रसाद

भारत में सभी शहरी क्षेत्रों के आसपास के वनों को कंजर्वेशन रिज़र्व घोषित करना आवश्यक है

30X30 एक वैश्विक संरक्षण पहल है, जिसका उद्देश्य 2030तक पृथ्वी के 30 प्रतिशत भूमि और महासागरों की रक्षा करना है। यह जैव विविधता कन्वेंशन (सीबीडी) के वर्ष 2020 के बाद के वैश्विक जैव-विविधता ढांचे के तहत एक प्रमुख लक्ष्य है। भारत के लिए, सभी पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 7,935 शहर और कस्बे थे। यहाँ शहरीकरण तेजी से बढ रहा है। इन शहरों और कस्बों के आसपास स्थित पेरी-अर्बन वनों की रक्षा करना पारिस्थितिक गलियारों को मजबूत करेगा, शहरी जैव-विविधता को बढ़ावा देगा और जलवायु सहनशीलता में सुधार करेगा। ये वन कार्बन भंडार के रूप में कार्य करते हैं, महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करते हैं और घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जैव-विविधता हानि को कम करते हैं। पेरी-अर्बन वनों को 30X30 रणनीति में शामिल करना समावेशी संरक्षण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता के साथ मेल खाता है, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी और देश की अनोखी जैव-विविधता और पारिस्थितिक अखंडता के लिए एक टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करना शामिल है।

पेरी-अर्बन वन-हरे भरे क्षेत्र जो शहरों के बाहरी इलाकों में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्थित हैं-पारिस्थितिक जीवनरेखा हैं जो शहरीकरण के प्रतिकूल प्रभावों को कम करते हैं। ये वन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करते हैं, जिनमें कार्बन अवशोषण,जल चक्र विनियमन, जैव-विविधता संरक्षण, स्थानीय तापमान को संतुलित करना और अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रकृति-आधारित समाधान के स्त्रोत के रूप में काम करना शामिल है। तेजी से शहरी विस्तार के साथ, पेरी-अर्बन वन, कटाई, शहरीकरण के कारण भूमि उपयोग में बदलाव और प्रबंधन में उपेक्षा जैसी बढ़ती चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसलिए, इनके बहुआयामी लाभों के प्रमाणों के आधार पर, सभी पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना और उनका प्रबंधन करना आवश्यक है।

भारत विश्व स्तर पर पेरी-अर्बन वनों की बहाली की उच्चतम संभावना वाले शीर्ष चार देशों में शामिल है, जिसमें चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राज़ील भी शामिल हैं। ये चार देश पुनर्स्थापन गतिविधियों के लिए उपलब्ध वैश्विक पेरी-अर्बन क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रदान करते हैं। अकेले भारत में लगभग 14 से 17 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऐसी पहलों के लिए उपयुक्त मानी गई है, जो जलवायु परिवर्तन से निपटने, जैव-विविधता को बढ़ावा देने और शहरी सहनशीलता में सुधार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (एस. फ्रांसिनीएटअल., नेचर सिटीज, वॉल्यूम 1, पेज 286-294, 2024)। यह वैश्विक पुनर्स्थापन प्रयासों में भारत की केंद्रीय भूमिका और लक्षित पुनर्वनीकरण गतिविधियों के माध्यम से महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और सामाजिक लाभ प्रदान करने की इसकी क्षमता को उजागर करता है।

भारत में शहरी और पेरी-अर्बन राष्ट्रीय उद्यानों और संरक्षण रिज़र्वों का एक व्यापक नेटवर्क है, जो जैव-विविधता संरक्षण और शहरी पारिस्थितिकी सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान (मुंबई), जो 103 वर्ग किलोमीटर में फैला है, शहर के लिए एक हरा फेफड़ा है और तेंदुओं सहित विविध वन्यजीवों का घर है। इसी तरह,वन विहार राष्ट्रीय उद्यान (भोपाल), 4.45 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और प्राकृतिक बाड़ों में जानवरों के साथ एक प्राणी उद्यान के रूप में कार्य करता है। गिंडी राष्ट्रीय उद्यान (चेन्नई),जो केवल 2.7 वर्ग किलोमीटर में फैला है, काले हिरण, चीतल और पक्षियों के लिए एक शहरी अभयारण्य है।

हैदराबाद में का सूब्रह्मानंद रेड्डी (केबीआर) राष्ट्रीय उद्यान, जो 1.43 वर्ग किलोमीटर में फैला है, शहर के केंद्र में स्थित एक शहरी वन है, जो उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनस्पति को संरक्षित करता है और आवश्यक पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करता है। महावीर हरीना वनस्थली राष्ट्रीय उद्यान, 14.59 वर्ग किलोमीटर में फैला है और काले हिरणों की आबादी और शिक्षा तथा मनोरंजन में अपनी भूमिका के लिए जाना जाता है। बन्नेरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान (बेंगलुरु), 260.5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और हाथी गलियारे और पारिस्थितिक पर्यटन सुविधाओं को जोड़ता है, जो शहरी दबावों और वन्यजीव संरक्षण के बीच संतुलन बनाता है।

चंदका-दामपाड़ा वन्यजीव अभयारण्य, जो भुवनेश्वर, ओडिशा के पास स्थित है, 193.39 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और शहरी क्षेत्रों के करीब एक महत्वपूर्ण हाथी अभयारण्य है। यह मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने और जैव-विविधता को संरक्षित करने में पेरी-अर्बन संरक्षित क्षेत्रों के महत्व को रेखांकित करता है। जयपुर का झालाना-अमागढ़ कंजेर्वेशन रिज़र्व, जो 32 वर्ग किलोमीटर में फैला है, अपनी बढ़ती तेंदुओं की आबादी, कार्बन संचय, भू-जल पुनर्भरण और पर्यावरण पर्यटन के लिए जाना जाता है।

हमने हैदराबाद, तेलंगाना के पास स्थित 109 शहरी और पेरी-अर्बन वनों में से एक का दौरा किया, जो 250 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है और उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन प्रजातियों के उल्लेखनीय प्राकृतिक पुनर्जनन को प्रदर्शित करता है। मजबूत संरक्षण उपायों ने जैव-विविधता की रक्षा की है, जलग्रहण क्षेत्र की स्थिति को बेहतर बनाया है और आसपास की झीलों को स्वच्छ पानी प्रदान किया है। इसी प्रकार हैदराबाद का सूब्रह्मानंद रेड्डी (केबीआर) राष्ट्रीय उद्यानएक महत्वपूर्ण शहरी संरक्षित क्षेत्र है, जहाँ चंदन (सैंटलम एल्बम) के उल्लेखनीय प्राकृतिक पुनरुत्पादन को देखा गया है। यह मुख्य रूप से पक्षियों द्वारा बीजों के प्रसार के माध्यम से संभव हुआ है, जिसमें बुलबुल पक्षी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ये पक्षी पार्क के 353 एकड़ क्षेत्र में, जिसमें संरक्षण और पर्यटन क्षेत्र दोनों शामिल हैं, बीजों को फैलाने में सहायक हैं।

जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से पेरी-अर्बन वनों के पारिस्थितिक और सामाजिक लाभों को उजागर किया जा सकता है, जिससे नागरिकों को इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा के लिए प्रेरित किया जा सके। इन सभी प्रयासों से पेरी-अर्बन वनों का संरक्षण न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को सुनिश्चित करेगा, बल्कि देश के आर्थिक और सामाजिक लाभों में भी योगदान देगा।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल शहर के लिए हरे फेफड़े का काम करता है, जैव-विविधता संरक्षण में योगदान देता है, पारिस्थितिक पर्यटन को बढ़ावा देता है, और आसपास की झील के लिए जल विनियमन को बेहतर बनाता है। अपनी छोटी सीमा के बावजूद, वन विहार संरक्षण और मनोरंजन के बीच संतुलन स्थापित करता है। पारिस्थितिक संरक्षण और शहरी योजना को एकीकृत करने का उत्तम उदाहरण है।

पेरी-अर्बन वन स्थानीय जलवायु को स्थिर करने के लिए अपरिहार्य हैं, विशेष रूप से उन शहरी और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जो अत्यधिक गर्मी की चपेट में आते हैं। झालाना-अमागढ़ संरक्षण रिज़र्व इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रोफेसर आर. योसेफ और उनकी टीम द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि पेरी-अर्बन वनभूमि सतह तापमान (LST) को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सैटेलाइट इमेजरी का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने पाया कि झालाना-अमागढ़ संरक्षण रिज़र्व के भीतर का थएऊ, आसपास के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में सभी मौसमों में काफी कम था। यह शीतलन प्रभाव दिखाता है कि वन शहरी गर्मी द्वीपों (Urban Heat Islands) का कैसे मुकाबला करते हैं, जो अन्यथा शहरों में गर्मी से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों को बढ़ाते हैं (Forests, Vol. 13, Pages 1101, 2022)?। यह निष्कर्ष घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जीवन स्तर को सुधारने के लिए भारत में शहरी और पेरी-अर्बन वनों को प्राथमिकता देने की मजबूत वकालत करता है।

शीतलन के अलावा, पेरी-अर्बन वन वैश्विक जलवायु शमन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एस. फ्रांसिनी और उनके सहयोगियों ने पाया कि विश्व स्तर पर उपयुक्त पेरी-अर्बन क्षेत्रों को पुनर्स्थापित करके 101 से 106 अरब पेड़ों के लिए स्थान उपलब्ध कराया जा सकता है, जो कार्बन अवशोषण में महत्वपूर्ण योगदान देगा (Nature Cities, Vol. 1, Pages 286–294, 2024)?

पेरी-अर्बन वनों में निवेश पारंपरिक 'ग्रे' अवसंरचना,जैसे बांध और तटबंध, के बजाय बाढ़ नियंत्रण और जलवायु अनुकूलन के लिए एक किफायती विकल्प है। आर. मलेकनिया और उनकी टीम द्वारा किए गए अध्ययन यह दर्शाते हैं कि पेरी-अर्बन वन प्राकृतिक स्पंज के रूप में कार्य करते हैं, वर्षा जल को अवशोषित करते हैं, जल पुनर्भरण करते हैं, और शहरी बाढ़ के जोखिम को कम करते हैं (Forests, Vol. 15, 2024)? यह पारिस्थितिकी सेवा आपदा के बाद के पुनर्वास पर होने वाले आर्थिक बोझ को कम करती है और दीर्घकालिक सहनशीलता सुनिश्चित करती है।

पेरी-अर्बन वन पारिस्थितिक पर्यटन, टिकाऊ आजीविका और शीतलन के लिए ऊर्जा लागत को कम करके अतिरिक्त आर्थिक लाभ भी प्रदान करते हैं। ऐसी सेवाएं पेरी-अर्बन वनों को संरक्षित करने के वित्तीय लाभों को रेखांकित करती हैं। पेरी-अर्बन वनों को कंजर्वेशन रिज़र्व घोषित करना संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित करेगा और स्थानीय व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करेगा।

पेरी-अर्बन वन स्वच्छ हवा प्रदान करके, गर्मी के तनाव को कम करके और मनोरंजन स्थल के रूप में शहरी जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं। ये लाभ विशेष रूप से भारत के घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, जहाँ हीट-वेव और वायु प्रदूषण शहरी समुदायों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, पेरी-अर्बन वन मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करते हैं। मनोरंजन स्थलों के रूप में ये वन व्यायाम और विश्राम के अवसर प्रदान करते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं।

पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना एक क्रांतिकारी नीतिगत समाधान है, जो इन वनों की सुरक्षा को संस्थागत रूप देगा और उनके पारिस्थितिक, आर्थिक और सामाजिक लाभों को पूरी तरह से प्राप्त करने की क्षमता को साकार करेगा। कंजर्वेशने रिज़र्व कानूनी ढांचा प्रदान करते हैं, जो वनों को शहरी अतिक्रमण और अव्यवस्थित दोहन से बचाते हैं, साथ ही समुदाय की भागीदारी को भी सक्षम बनाते हैं। पेरी-अर्बन वनों के संरक्षण को लागू करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, जीआईएस और रिमोट सेंसिंग उपकरणों का उपयोग करके पेरी-अर्बन वनों की पहचान और मूल्यांकन करना चाहिए, जो भूमि सतह तापमान और पारिस्थितिकी सेवाओं से संबंधित महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करेगा। दूसरे, नीतिगत और कानूनी सुधारों के माध्यम से इन क्षेत्रों को औपचारिक रूप से समय समय पर संशोधित, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के अनुरूप कंजर्वेशन रिज़र्व के रूप में नामित करना आवश्यक है, जिससे इनकी दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। तीसरे, सहभागी योजना और शिक्षा के माध्यम से समुदायों को शामिल करना महत्वपूर्ण है, ताकि जन-जागरूकता बढ़ाई जा सके और स्थानीय स्तर पर संरक्षण प्रयासों में भागीदारी सुनिश्चित हो। चौथे, सीधी बुआई (बीजारोपण), असिस्टेड नेचुरल रिजनेरेशन जैसी वैज्ञानिक पुनर्स्थापन तकनीकों का उपयोग करके वनों के पुनर्स्थापन और क्षतिग्रस्त वनों को बेहतर करने में मदद मिल सकती है। अंत में, जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से पेरी-अर्बन वनों के पारिस्थितिक और सामाजिक लाभों को उजागर किया जा सकता है, जिससे नागरिकों को इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा के लिए प्रेरित किया जा सके। इन सभी प्रयासों से पेरी-अर्बन वनों का संरक्षण न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को सुनिश्चित करेगा, बल्कि देश के आर्थिक और सामाजिक लाभों में भी योगदान देगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

सादगी और सरलता के धनी थे ''सवाई सिंह धमोरा''

सवाईसिंह धमोरा की पुण्यतिथि पर विशेष.....

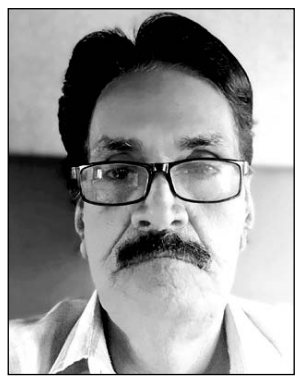

मिश्रीलाल पंवार

राजस्थान शूरवीरों, संतों तथा विद्वानों की कर्मभूमि रही है। महाराणा प्रताप के शौर्य और स्वाभिमान ने राजस्थान को पूरे विश्व में प्रसिद्ध कर दिया वहीं मीरा बाई, संत पीपा जी तथा धन्ना भगत ने राजस्थान को संतों की भूमि होने का गौरव प्रदान किया।

राजस्थान में समय समय पर ऐसी विभूतियों का उदय होता रहा है। जिन्होंने समाज को अपने विचारों से एक नई दिशा दिखाई। महान विचारक, पत्रकार एवं इतिहासकार सवाईसिंह धमोरा भी एक ऐसे ही महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने विचारों से समाज का मार्गदर्शन कर एक नई दिशा दी।

जानकारों का कहना है कि सवाईसिंह धमोरा स्वयं एक इतिहास थे, एक आंदोलन थे। एक सभ्यता व संस्कृति के ध्वज वाहक थे। वे सही के लिए अंतिम दम तक अपनी बात पर टिकने वाले व्यक्तित्व के धनी थे। वे एक सुलझे हुए पत्रकार भी थे। अपनी मर्जी के मालिक थे। गलत को ग़लत और सही को सही कहने का माद्दा रखते थे। यह कहना भी ग़लत नहीं होगा कि वे राजस्थानी भाषा, इतिहास व संस्कृति की चलती-फिरती डिक्शनरी थे। वे बहुप्रतिभा के धनी थे।

आकाशवाणी व दूरदर्शन के प्रसिद्ध वाचक व वार्ताकार भी रहे। अनेक अखबारों के प्रसिद्ध स्तंभकार थे। 91 वर्ष की आयु में भी वे लगातार अखबारो में लिखते रहते थे। भू स्वामी आन्दोलन से भी जुड़े रहे। भू स्वामी आंदोलन के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। बाद में वे आकाशवाणी के जयपुर केन्द्र में सेवारत हो गये। देश प्रदेश के अधिकांश हिन्दी भाषा के समाचार पत्र-पत्रिकाओ में उनके लिखे लेख प्रमुखता से प्रकाशित होते थे। उन्होने राजस्थानी में पीरू प्रकाश, गांधी गाथा, चित्तोड़ का जोहर नामक पुस्तके भी लिखी थी। उन्होंने सारा जीवन सादगी से जीया। उनकी वाणी में में इतना प्रभाव था कि जो भी एक बार उनसे मिलता, सदा के लिए उनका हो जाता। उन्होने 1957 में गुढ़ा विधानसभा क्षेत्र से रामराज पार्टी के प्रत्याशी के रूप में चुनवा भी लड़ा था मगर राजनैतिक पैंतरेबाजी से अनभिज्ञ थे। इसलिए कांग्रेस प्रत्याशी से हार गये थे। राजपूत संस्कृति तथा परम्पराओ का उन्होंने गहन अध्ययन किया। जब वे तर्क के साथ अपनी बात कहते थे तो अच्छों-अच्छों की बोलती बन्द हो जाती। राजपूत संस्कृति और धर्म तथा परम्पराओ के जानकार थे। इतिहास के दृष्टिकोण में उनका स्पष्ट मत था कि हमे राजपूत इतिहास को हमारे खुद के नजरिये से देखना होगा, लिखना होगा और इतिहास लेखन में हमारी परम्पराओ और अन्य परम्परागत स्त्रोतों का इस्तेमाल करना होगा। वे क्षत्रियों को हमेशा कहते थे कि यदि हमारे लोग इतिहास को राजपूत दृष्टिकोण से नहीं पढेंगे तब तक ये इतिहास हमे प्रेरणा देने लायक नहीं बन पायेगा। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि क्षत्रिय खुद के इतिहासकार हो।

90 वर्ष की उम्र में भी अध्ययन के प्रति उनका बेहद लगाव रहा। सादगी ऐसी थी कि मिलने वाला देखता ही रह जाता। विनम्रता और सरलता ऐसी थी कि जिससे एक बार मिल लेते थे उसका दिल जीत लेते थे, बुद्धि कौशल ऐसा था कि जिससे वाद विवाद कर लेते उसको अपने अकाट्यय तर्कों से नेस्तानबूत कर देते थे। इतिहास का ज्ञान ऐसा था कि सुनने वाले को मंत्रमुग्ध कर देते थे और वैचारिक रूप से इतने परिपक्व थे कि समाज की सभी समस्याओं का समाधान पलभर में बता देते थे। क्षत्रिय धर्म पर चलने के विषय में कहते थे कि मुझे पुनर्जन्म पर पूर्ण विश्वास है और मैं इस लोक से जाने के बाद किसी श्रेष्ठ क्षत्राणी की कोख से फ़िर यही जन्म लूंगा।

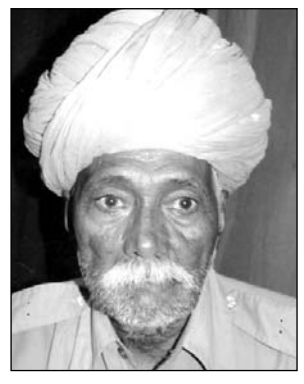

सवाईसिंह धमोरा

सवाई सिंहजी धमोरा का निधन 12 सितंबर 2017 को लगभग 91 वर्ष की उम्र में हो गया था। उन्होंने एक लंबा सार्वजनिक जीवन जिया। अनेकों पुस्तकों का लेखन किया। इन पुस्तकों में गांधी गाथा, चारण चिंतन, पीरू प्रकाश, शैतान सुजस, गुढ़ा गौड़जी गोपीनाथ, बाल गीत, सम्राट पृथ्वीराज चौहान, चित्तौड़ के जौहर व शाके सहित अनेक पुस्तकें शामिल हैं।

आपने क्षत्रिय समाज के लिए खूब काम किया। भूस्वामी आंदोलन, चौपासनी आंदोलन, रूपकंवर सती दिवराला आंदोलन सहित समाज के हर कार्य में अग्रणी रहे। राजपूत सभा, जयपुर के मंत्री रूप में भी अपनी सेवाएं दी। आप लंबे समय तक राष्ट्रदूत के साथ भी जुड़े रहे। राजस्थान धरा के इस सपूत को उनकी पुण्यतिथि पर शत् शत् नमन।

-मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

किशोरपुरा क्रशर जोन का नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल टीम ने किया निरीक्षण

निरीक्षण के दौरान टीम ने पर्यावरणीय मानकों की अनदेखी और वन भूमि से होकर गुजरने वाले अवैध मार्गों पर चिंता जताई

पाटन, (निसं)। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) की विशेष टीम ने हाल ही में किशोरपुरा स्थित क्रशर जोन का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान टीम ने पर्यावरणीय मानकों की अनदेखी और वन भूमि से होकर गुजरने वाले अवैध मार्गों पर गहरी चिंता व्यक्त की।

निरीक्षण के दौरान टीम ने पाया कि क्रशर जोन में धूल नियंत्रण के लिए पानी का छिड़काव नहीं किया जा रहा, जिससे क्षेत्र में वायु प्रदूषण गंभीर स्तर तक बढ़ गया है। इसका सीधा असर आसपास के निवासियों, विशेषकर सांस की बीमारियों से ग्रसित लोगों पर पड़ रहा है। निरीक्षण के दौरान यह भी सामने आया कि क्रशर जोन के अधिकतर हिस्सों में हरियाली का पूर्ण अभाव है। पेड़-पौधों की कमी न केवल पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित कर रही है, बल्कि धूल और प्रदूषण को भी बेकाबू बना रही है। टीम ने यह भी स्पष्ट किया कि क्रशर संचालन के लिए पर्यावरणीय नियमों के तहत हरियाली बनाए रखना अनिवार्य है। टीम ने वन भूमि से होकर गुजरने वाले कुछ अवैध रास्तों की भी पहचान की, जिन्हें पूर्व में वन विभाग द्वारा बंद किया गया था, परंतु वर्तमान में वे फिर से उपयोग में लाए जा रहे हैं। इससे न केवल वन क्षेत्र को नुकसान पहुंच रहा है, बल्कि यह नियमों का खुला उल्लंघन भी है।

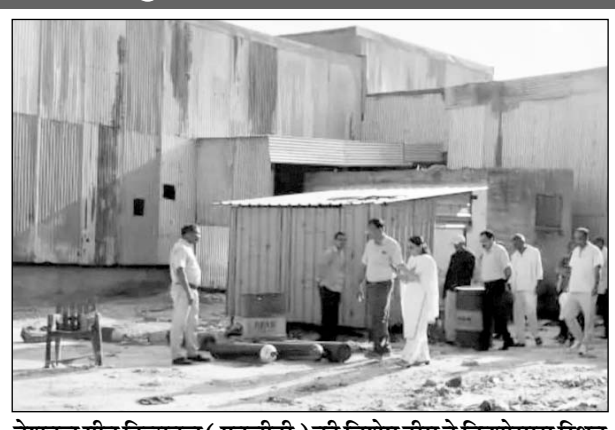

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) की विशेष टीम ने किशोरपुरा स्थित क्रशर जोन का औचक निरीक्षण कर जानकारी ली।

- **टीम ने पाया कि क्रशर जोन में धूल नियंत्रण के लिए पानी का छिड़काव नहीं किया जा रहा, जिससे क्षेत्र में वायु प्रदूषण गंभीर स्तर तक बढ़ गया है**
- **किशोरपुरा क्रशर जोन की स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर नवंबर तक संबंधित उच्च अधिकारियों को सौंपी जाएगी : एनजीटी**

एनजीटी टीम ने कहा कि किशोरपुरा क्रशर जोन की स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर नवंबर तक संबंधित उच्च अधिकारियों को सौंपी जाएगी, जिसमें पर्यावरणीय क्षति, अवैध गतिविधियों और सुधारात्मक उपायों की सिफारिशें शामिल होंगी। जिला प्रशासन और खनन विभाग ने इस पूरे प्रकरण को गंभीरता से लिया है और निगरानी तंत्र को और मजबूत करने के संकेत दिए हैं। अधिकारियों का कहना है कि पर्यावरण संरक्षण और अवैध खनन पर अंकुश लगाने के लिए नियमित निरीक्षण और सख्त कार्रवाई की जाएगी। एनजीटी टीम के इस हस्तक्षेप से मूलाराम मुनिम सहित नागरिकों में उम्मीद जगी है कि अब क्रशर जोन में नियमों का पालन सुनिश्चित होगा और वायु प्रदूषण से राहत मिलेगी।

पुलिया टूटने से रास्ता अवरुद्ध, ग्रामीणों ने गहरे पानी में से होकर शवयात्रा निकाली

भीम, (निसं)। भीम उपखंड की डूंगाजी का गांव ग्राम पंचायत अंतर्गत डांसरिया भागावड से रतनी का चौड़ा रोड की पुलिया टूटकर सड़क पानी में बह जाने से रतनी का चौड़ा श्मशान घाट का रास्ता अवरुद्ध हो गया, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

डांसरिया भागावड से रतनी का चौड़ा रोड की पुलिया टूटने से श्मशान घाट का रास्ता अवरुद्ध हो गया है, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। डांसरिया निवासी हरिसिंह की पत्नी माया देवी का निधन हो गया और शव यात्रा को रतनी का चौड़ा श्मशान घाट तक पहुंचाने के लिए ग्रामीणों को गहरे पानी से होकर गुजरना पड़ा। भागावड़ से

- **डांसरिया भागावड से रतनी का चौड़ा रोड की पुलिया टूटकर सड़क पानी में बहने से रास्ता अवरुद्ध हो गया था**

मंगरदों व डासरिया जोड़ने वाली सड़क टूट गई। जानकारी के अनुसार भीम उपखंड की डूंगाजी का गांव ग्राम पंचायत अंतर्गत डांसरिया भागावड से रतनी का चौड़ा रोड की पुलिया टूटकर सड़क पानी में बह गई।

सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता हरिराम चौधरी ने बताया कि क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में काफी सड़कों के डैमेज होने की सूचना पर मौका निरीक्षण रिपोर्ट तैयार की है। डांसरिया भागावड से रतनी का चौड़ा रोड की पुलिया टूट गई है। जिससे श्मशान घाट भी पानी के तेज बहाव की चपेट में आया। डांसरिया निवासी नारायणसिंह, देवीसिंह, किशनसिंह, चेतनसिंह, गोविंदसिंह, प्रतापसिंह, मोहनसिंह, छगनसिंह आदि ग्रामीणों ने बताया कि पुलिया टूटने से आवागमन बाधित हुआ है। स्कूली छात्रों और ग्रामीणों का रास्ता बंद हो गया है। डांसरिया के ग्रामवासियों ने बताया कि भारी बारिश के कारण पुलिया टूटने की घटनाएं सामने आई हैं और घटिया निर्माण सामग्री के उपयोग तथा पुलिया निर्माण के दौरान जल निकासी एवं बहाव क्षेत्र का स्थाई समाधान नहीं किया गया है।

ग्रामीणों को शवयात्रा ले जाने के लिये परेशानी का सामना करना पड़ा।

राशिफल रविवार 14 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, रोहिणी नक्षत्र प्रात: 8:41 तक, वज्र योग प्रात: 7:35 तक, बालव करण सायं 4:06 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:04 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृष, मंगल-तुला, बुध-सिंह, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग प्रात: 8:41 तक है। आज कालाष्टमी, रोहिणी व्रत है। आज महालक्ष्मी व्रत समाप्त होगा। आज अष्टमी का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:47 से 9:19 तक, लाभ-अमृत 9:19 से 12:22 तक, शुभ 1:54 से 3:26 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:15, सूर्यास्त 6:30

मेष
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

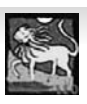

सिंह
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी।

धनु
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। मन:स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

मकर
परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में उचित महत्वपूर्ण मामलों में उचित परामर्श मिल सकता है। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मिथुन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।